

संपादकीय

बड़ी दिमागी खोज

मा नवता के कल्याण के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए, जिस प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार की स्थापना की गई थी, इस बार चिकित्सा विज्ञान में खोज के लिये दिया जा रहा पुरस्कार उस कसौटी पर खरा उतरता है। मेडिसिन के लिये वर्ष 2026 का नोबेल पुरस्कार अमेरिका और जर्मनी के तीन वैज्ञानिकों को देने की घोषणा की गई है। कार्ल डेसराथ पीटर हेगमान और जॉर्ज नेगल को यह सम्मान दिमाग की कोशिकाओं को रोशनी से निर्वजित करने वाली खोज के लिये मिला है। इस खोज ने दिमाग के अध्ययन करने का एक नया तरीका वैज्ञानिकों को उपलब्ध कराया है। उनकी खोज व अनुसंधान से 'ऑटोजेनेटिक्स' तकनीक विकसित करने में मदद मिली है, जो मनुष्य की तंत्रिका कोशिकाओं को नियंत्रित करने के लिये रोशनी का प्रयोग करती है। दरअसल, इस तकनीक का विचार इसके जटिल नाम से ज्यादा आसान है। उल्लेखनीय है कि मनुष्य के मस्तिष्क में अर्बों नर्व सेल्स यानी न्यूरॉन्स होते हैं, जो इलेक्ट्रिकल और केमिकल सिग्नल्स के जरिये आपस में संवाद स्थापित करते हैं। विज्ञानी लगातार खोज करते रहे हैं कि मस्तिष्क की सक्रियता, याददास्त, भावनाओं और व्यवहार को नियंत्रित करने में न्यूरॉन्स समूहों की कैसी भूमिका होती है। निःसंदेह, यह वैज्ञानिकों के लिये एक बड़ी चुनौती थी क्योंकि आधुनिक तकनीकों से दिमाग की गतिविधि पर तो नजर रखी जा सकती थी, लेकिन विभिन्न कोशिकाओं को ठीक से नियंत्रित करना कठिन था। इस खोज की शुरुआत पीटर हेगमान द्वारा हरे शैवाल के रोशनी की ओर तैरने के रहस्य को सुलझाने से हुई। हेगमान और नेगल ने एक ऐसा प्रोटीन खोजा जो नीली रोशनी पड़ने पर आयन चैनल खोलकर इलेक्ट्रिकल हलचल पैदा करता है। वैज्ञानिकों ने इस बात का अध्ययन किया कि यह प्रोटीन रोशनी पर कैसी प्रतिक्रिया करता है। अंततः इस खोज का प्रयोग न्यूरॉन्स को रोशनी के प्रति संवेदनशील बनाने के लिये किया गया। इसके बाद ही शोधकर्ता चुनिंदा तंत्रिका कोशिकाओं को सक्रिय या निष्क्रिय करके देख सके कि इसका कैसा प्रभाव होता है।

माना जा रहा है कि दिमाग की कोशिकाओं का नियमन करने वाले स्विच बटन की खोज चिकित्सा विज्ञान में बड़े बदलाव का वाहक बन सकती है। अब तक वैज्ञानिकों को ज्ञात था कि किसी क्रिया या भावना की अभिव्यक्ति में दिमाग का कौन-सा हिस्सा सक्रिय था। लेकिन नई खोज के जरिये वैज्ञानिक पता लगा सकते हैं कि किन खास कोशिकाओं को सक्रिय या शांत करने से यह वास्तविक प्रतिक्रिया सामने आती है। निश्चित रूप से अब विशिष्ट तंत्रिका कोशिकाओं के व्यवहार की व्यापक जानकारी जुटाई जा सकेगी। कह सकते हैं कि दिमाग के व्यवहार को समझने के लिये अब नये रास्ते खुल गये हैं। बहरहाल, यह खोज इस बात का शानदार उदाहरण है कि बुनियादी वैज्ञानिक शोध से कैसे अप्रत्याशित और बड़ी कार्यावाही मिल सकती है। शुरुआत में एक छोटे से शैवाल में मौजूद रोशनी के प्रति संवेदनशील प्रोटीन का अध्ययन इस बात के लिये किया गया था कि वह जीव रोशनी पर कैसी प्रतिक्रिया करता है। लेकिन अंततः यह खोज प्रकृति के सबसे बड़े रहस्यों में से एक, यानी इंसानी दिमाग की प्रामाणिक जांच के लिये एक मजबूत व विश्वसनीय साधन बन गयी। भरोसा है कि यह खोज मानव कल्याण के नये मार्ग खोलेगी। वैज्ञानिक दावा कर रहे हैं कि इस खोज के सामने आने के बाद आँखों की रेटिना कोशिकाओं की प्रकाश के प्रति संवेदनशील बनाकर, उन लोगों के जीवन में रोशनी लायी जा सकेगी, जो किसी रोग के कारण दृष्टिहीन हो गए थे। वहीं दुनिया में तेजी से बढ़ रहे दिमागी रोग पार्किंसंस के रोग में, खास दिमागी कोशिकाओं को नियंत्रित करके ऐसे रोगी के शरीर में कंपन व अन्य लक्षणों को नियंत्रित किया जा सकेगा। दूसरी तरफ आधुनिक जीवन शैली से उपजे अवसाद व तनाव के निर्वण में भी यह खोज सहायक बन सकती है। उम्मीद जगी है कि यह खोज अवसाद व तनाव के दौरान दिमाग के प्रभावित हिस्सों की पहचान कर सकेगी।

लोकतंत्र में सबसे महत्वपूर्ण जनता का विश्वास...

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत उसकी चुनाव प्रणाली और जनता का मताधिकार है। सत्ता बदलने का अधिकार जनता के पास है और इसी अधिकार की विश्वसनीयता लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करती है। लेकिन जब चुनाव प्रक्रिया पर ही सवाल उठने लगे, मतदाता सूची की शुद्धता को लेकर संदेह पैदा हो और विपक्ष चुनाव प्रणाली में कथित अनियमितताओं के आरोप लगाते हुए सड़क पर उतर आए, तो यह केवल किसी राजनीतिक दल का विरोध नहीं रह जाता, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता से जुड़ा गंभीर प्रश्न बन जाता है। इसलिए लोकतंत्र में सबसे महत्वपूर्ण है जनता का विश्वास है। अगर यह विश्वास खो गया, तो लोकतंत्र का अस्तित्व ही खो जायेगा? इस पर लोकतंत्र के चौकीदारों को सोचना पड़ेगा समझना पड़ेगा? जनता के अंदर यह विश्वास दिलाना होगा कि आपका वोट सुरक्षित है। राजधानी दिल्ली में मोलबहार को जो राजनीतिक घटनाक्रम देखने को मिला, उसने इस बहस को और तेज कर दिया। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी इंडिया गठबंधन के मार्च की धुरी बने और विपक्षी संसद संसद भवन से निर्वाचन आयोग के मुख्यालय की ओर मार्च करने निकले, लेकिन पुलिस ने उन्हें संसद मार्ग पर ही रोक दिया। इसके बाद सड़क पर धरना, हिरासत और फिर अकाशवाणी भवन परिसर में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्वा तथा अन्य नेताओं का करीब नौ घंटे तक चला विरोध प्रदर्शन भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम के रूप में सामने आया। राहुल गांधी की हिरासत और उनके साथ बड़ी संख्या में विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी ने राजनीतिक टकराव को और तीखा कर दिया। देर रात सभी को छोड़ दिया गया, लेकिन इस घटनाक्रम ने एक बुनियादी सवाल जरूर खड़ा किया है। क्या चुनावी प्रक्रिया को लेकर उठ रहे सवालों का समाधान राजनीतिक टकराव से होगा या संस्थागत संवाद से? विपक्ष का आरोप है कि मतदाता सूची और चुनाव प्रणाली में ऐसी अनियमितताएं हो रही हैं जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं। राहुल गांधी ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत और मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर गंभीर आरोप लगाए तथा वोट चोरी के जरिए देश को हाईजेक करने तक की बात कही। उन्होंने इसे देशद्रोह बताया और कहा कि ऐसा करने वाले बच नहीं पाएंगे। इन आरोपों की गंभीरता को देखते हुए इसका राजनीतिक भाषणों तक सीमित रह जाना उचित नहीं होगा। यदि आरोप गलत हैं तो उन्हें तथ्यों के साथ खारिज किया जाना चाहिए और यदि किसी स्तर पर चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ी के प्रमाण हैं तो उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। लोकतंत्र में आरोप और प्रत्यारोप से अधिक महत्वपूर्ण तथ्य और प्रमाण होते हैं। दूध का दूध पानी का पानी होना चाहिए। यहां निर्वाचन आयोग की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

-सम्पादक

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर विशेष : भौतिक सुविधा और लोगों की खुशी की खातिर मानसिक सुकून से समझौता

आज मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं अत्यधिक तेजी से बढ़ी हैं, लेकिन लोग इन समस्याओं से समझौता करके घुट-घुटकर जी रहे हैं... तनाव के कारण सिज़ोफ्रेनिया और मनोविकार, द्विध्रुवी और मनोदशा विकार, प्रमुख अवसादग्रस्तता विकार, पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर और गंभीर चिंता, खाने के विकार, मादक द्रव्यों के सेवन संबंधी विकार, टाइप-2 मधुमेह और चयापचय सिंड्रोम, हृदय रोग, मोटापा, क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज, तंत्रिका संबंधी और मस्कुलोस्केलेटल समस्याएं, क्रॉनिक दर्द सिंड्रोम, माइग्रेन, ऑस्टियोपोरोसिस और गति संबंधी विकार, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल तथा प्रतिरक्षा संबंधी विकार जैसे अनेक गंभीर विकार होते हैं...



डॉ. प्रीतम भी. गेडम

आज के युग में स्वास्थ्य, लालच, द्वेष, चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, मिलावटखोरी, प्रदूषण, भेदभाव और मनुष्य की असीमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए चल रहा कभी न खत्म होने वाला संघर्ष जिंदगी का सुकून छीन रहा है। हर कोई अपने खराबों को पूरा करने के लिए भेड़चाल में भाग रहा है। किसी के पास रोजगार नहीं, किसी के पास प्रेम नहीं, परिवार नहीं, चरित्रवान जीवनसाथी नहीं, निरोगी शरीर नहीं, संस्कारशून्य बच्चे नहीं, सहयोगी परिवार और मित्र नहीं, समय नहीं, नाम और शोहरत नहीं, कोई सख्ता नहीं तो किसी के पास धन-दौलत नहीं। दुनिया में कोई भी व्यक्ति जीवन को सभी खुशियों, सुकून और सुख-सुविधाओं के साथ परिपूर्ण नहीं हो सकता। समस्याएं सभी के जीवन में होती हैं, लेकिन उनके कारण पूरे जीवन परेशान रहकर और डर-डरकर जीना उचित नहीं है। हमारे पास जो उपलब्ध है, उसे समाधान मानने के बजाय मनुष्य असंतोषी बनकर अपने जीवन को स्वयं ही कष्टमय बना रहा है। मनुष्य अपने जीवन में खुशी की परिभाषा बदल रहा है। वह दूसरों के दुःख में खुशी और दूसरों की खुशी में

ईर्ष्या से भर जाता है। अपने स्वास्थ्य के लिए प्रकृति का दोहन करता है और फिर स्वयं ही अशुद्ध हवा, पानी, भोजन और बीमारियों की समस्याओं से परेशान होता है। भौतिक सुविधाओं के पीछे भागते हुए आज पैसा ही ईश्वर बन चुका है, यह साबित करने पर लोग तुले हुए हैं।

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए दुनियाभर में हर साल 10 अक्टूबर को 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस' मनाया जाता है। वर्ष 2026 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की थीम 'निजी अनुभवों को सुनना: असली आवाजें, असली बदलाव' है। मनुष्य को पशुओं की भांति सरल जीवन जीना चाहिए, लेकिन झूठे दिखावे और आधुनिकता की होड़ में वह अपने मानसिक स्वास्थ्य को बर्बाद कर रहा है। कई बार जीवन में दूसरों की खुशी के लिए इंसान अपनी खुशी भी त्याग देते हैं। यह सिलसिला चलता रहता है और दूसरों की खुशी का ख्याल रखते-रखते हम अपनी मानसिक शांति खो बैठते हैं। जीवन में सबसे ज्यादा जरूरी मानसिक सुकून है, जिसके कारण मनुष्य चैन की सांस लेता है। मानसिक सुकून हमारे मन की खुशी से जुड़ा होता है। इसे हम खरीद नहीं सकते, बल्कि अपने सत्कर्मों और अच्छे आचरण से ही प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ समय पहले मैंने एक खबर पढ़ी थी कि अमेरिका की मिलिकन वैली के एक भारतीय उद्यमी ने अपनी 100 करोड़ रुपये की संपत्ति और आलीशान जीवनशैली त्यागकर भारत के एक छोटे से गांव में आकर बस गया। उसने भौतिक सुख-सुविधाओं के बजाय मानसिक सुकून, प्रकृति के निकट जीवन और आत्मिक संतुलन को प्राथमिकता दी। यह केवल एक उदाहरण नहीं है; दुनिया में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिल जायेंगे। जीवन में मानसिक शांति नहीं हो तो हमारे पास सब

कुछ होते हुए भी हम भीड़ में खुद को तनहा पाते हैं। हमारा जीवन सबसे अनमोल है और मानसिक शांति हमारे जीवन की असली सफलता को दर्शाती है कि हम कितने सुकून से जी रहे हैं। पैसा केवल क्षणिक सुविधाएं खरीद सकता है। हमारे देश में मजदूर और किसान वर्ग में आत्महत्या की घटनाएं अधिक देखने को मिलती हैं। छोटे व्यापारी वर्ग, छात्र, गृहिणी, युवा और सरकारी कर्मचारी वर्ग में भी आत्महत्या की घटनाएं बढ़ी हैं। इसके मुकाबले राजनीतिक रसूख वाले व्यक्तियों और नेताओं में यह समस्या नजर नहीं आती। नेता अच्छे हों या बुरे, लेकिन मानसिक तनाव का बेहतर प्रबंधन करना कला उनसे सीखनी चाहिए। उन्हें अनेक बार राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत दबावों का सामना करना पड़ता है। चुनाव हारना, आरोपों का सामना करना, चोटालों में जांच एजेंसियों की कारवायें, मीडिया में आलोचना, अदालतों में मामले, राजनीतिक मतभेद, धमकियां या आर्थिक-सामाजिक नुकसान जैसी परिस्थितियां उनके सामने आती रहती हैं। इसके बावजूद अनेक नेता कठिन परिस्थितियों में भी अपने सार्वजनिक दायित्वों को निभाते हुए संयम और आत्मविश्वास बनाए रखते हैं। चुनावी दौर में उम्मीदवार होने के बावजूद कई नेता लगातार सैकड़ों-हजारों किलोमीटर की यात्रा करते हैं। बारिश, धूप, ठंड, पानी और खराब मौसम के बीच भी वे कम नींद और कम आराम के बावजूद लगातार शारीरिक एवं मानसिक दबाव में काम करते हैं। रैलियों और सभाओं में उनका उत्साह तथा ऊर्जा दिखाई देती है। हालांकि, हर व्यक्ति की तनाव सहने और उससे निपटने की क्षमता अलग-अलग होती है। इसलिए नेताओं के सार्वजनिक जीवन से यह सीख ली जा सकती है कि कठिन परिस्थितियों में संयम, आत्मविश्वास कायम रखना और



तनाव का सकारात्मक ढंग से प्रबंधन करना जीवन के लिए उपयोगी गुण है। हर कोई अपने फायदे के लिए दूसरों के मन से खेलता है। दूसरों की खुशी के लिए अपनी खुशियों का गला मत घोटिए। जो व्यक्ति हमारे बुरे वक्त में हमारा साथ देता है, भावनाओं की कद्र करता है और हमारी परवाह करता है, हमें भी उसकी कद्र करनी चाहिए। बाकी लोग अपने स्वार्थ के हिसाब से खेलते हैं, उन्हें अपने जीवन के साथ खेलने का मौका मत दीजिए। किसी की कठपुतली मत बनिए। ऐसे लोगों से सावधान रहें और उनसे दूर रहें। अपनी आत्मिक खुशी का अर्थ समझिए। भौतिक सुविधाएं ही सब कुछ नहीं हैं। निश्चित होकर जीना सीखिए। तनाव से कोई फायदा नहीं, बल्कि केवल नुकसान होता है। जीवन की हर समस्या को एक अवसर मानकर हंसते हुए पार कीजिए। संघर्ष जीवन का हिस्सा है; डटना नहीं, घटना है। दुनिया की महानतम शक्तियतों ने भी अपने जीवन को संघर्षों से सँचा है, तब जाकर उन्होंने नाम और शोहरत हासिल की है। जीवन में आगे बढ़ना है तो अपना लक्ष्य निर्धारित करें और लगातार बेहतर बनने का प्रयास करें। नित नया कुछ सीखें। जीवन के छोटे-छोटे पलों

में भी खुशियां बांटना सीखें। जिंदगी से शिकायतें नहीं, समाधान ढूँढना सीखें। ओवरथिंकिंग से बचें और लोगों से ज्यादा अपेक्षाएं न रखें। कभी हाकर बैठना नहीं है। समय परिवर्तनशील है, हमारा भी समय बदलेगा। जैसे वातावरण में हम रहते हैं, वैसा ही हमारे शरीर और मन पर असर पड़ता है। इसलिए बुरे विचारों वाले लोगों और बुरी आदतों से हमेशा दूर रहें। घर-परिवार की जिम्मेदारी के साथ अपनी खुशी का भी ख्याल रखें। स्वस्थ रूचियों, व्यायाम, पशुप्रेम, समाजसेवा, पोषणकालिता और प्रकृति से निकटता बढ़ाएं। ये जीवन में सुकून लेकर आते हैं। पौष्टिक भोजन करें, संगीत सुनें, यात्रा करें, सामूहिक श्रमदान का हिस्सा बनें और अपनी खुशियों को जानें। जिस विषय में रुचि हो, उस पर काम करें। बस, हमारी वजह से किसी को परेशानी नहीं होनी चाहिए। यह अनमोल जिंदगी एक बार मिलती है। जिंदगी जीने के लिए है, काटने के लिए नहीं। व्यस्तता का बहाना छोड़ें और अपनी खुशी के लिए समय निकालना सीखें। अपना बेहतर कर्म करते रहें और आगे बढ़ते रहें। सबसे ज्यादा स्वयं की मानसिक शांति को प्राथमिकता दें, खुश रहें और तनावमुक्त जीवन जिएं।

यूपी में प्रियंका की भूमिका को लेकर उठते सवाल

उत्तर प्रदेश की सियासी पिच पर साल 2027 के विधानसभा चुनावों को लेकर भले ही बाहर से 'इंडिया' गठबंधन के अटूट होने का छिंटो पीटा जा रहा हो, लेकिन परदे के पीछे जो कुछ पक रहा है, वह किसी पॉलिटिकल थ्रिलर से कम नहीं है। सतह पर मुकाबला सत्ताधारी बीजेपी से होना चाहिए, पर कांग्रेस के तेवर देखकर ऐसा लग रहा है मानो उनका असली निशाना भारतीय जनता पार्टी नहीं, बल्कि समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया अखिलेश यादव हैं। दिल्ली के पावर गलियारों से लेकर लखनऊ के दफ्तरों तक, कांग्रेस जिस आक्रमण और जिद भरी शैली में जमीन मांग रही है, उसने राजनीतिक पिंडों को भी हैरान कर दिया है। सवाल यह उठ रहा है कि क्या प्रियंका गांधी वाड्वा 2027 के इस बड़े दंगल में बीजेपी को शिकस्त देने के बजाय समाजवादी पार्टी की सियासी जमीन पर कब्जा करने की कोई सुनियोजित स्ट्रैटेजी लिख रही है? इस पूरी प्रकथा को टाइमिंग और चेहरों को गौर से देखा जाए तो कई राज से पर्दा उठता है। संसद भवन में राहुल गांधी और अखिलेश यादव की मुलाकात के बाद से ही यह साफ हो गया था कि उत्तर प्रदेश से जुड़े तमाम राजनीतिक और सांठगिनत फैसलों की धुरी पूरी तरह प्रियंका गांधी के हाथों में है। इस महत्वपूर्ण बैठक के तुरंत बाद जमीन पर जो बड़े फेरबदल हुए, वे किसी सामान्य प्रशासनिक बदलाव का हिस्सा नहीं बल्कि एक बड़े सियासी गेम प्लान का हिस्सा थे। कांग्रेस ने अपने आक्रमक तेवरों को धार देने के लिए ऐसे चेहरों को आगे करना शुरू कर दिया जो सीधे तौर पर सपा को असहज करने के लिए जाने जाते हैं। आम आदमी पार्टी का दामन छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए राजेंद्र पाल गौतम को उत्तर प्रदेश का प्रभारी बनाया गया, तो वहीं तेज-तरंग और हमेशा मुखर रहने वाले सहरामपुर के सांसद इमरान मसूद को कार्यकारी अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंप दी गई। इसके साथ ही,

सौम्य छवि वाली आराधना मिश्रा 'मोना' को प्रदेश अध्यक्ष की कमान देकर इस नई तिकड़ी को मैदान में उतारा गया। कांग्रेस ने इसके जरिए सवर्ण, दलित और मुस्लिम समीकरण साधने की कागजी कोशिश तो जरूर की, लेकिन इनके बयानों ने गठबंधन के भीतर भूचाल ला दिया है। लखनऊ की धरती पर कदम रखते ही नवनिर्वाचित प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने यह कहकर समसनी फैला दी कि कांग्रेस कोई छोटी-मोटी पार्टी नहीं है और वह आगामी विधानसभा चुनाव में आधे से कम सीटों पर किसी भी कीमत पर समझौता नहीं करेगी। उनके इस बयान के बाद इमरान मसूद ने तो जैसे मोर्चा ही खोल दिया। वह हर रोज मीडिया के तीखे कैमरों के सामने अखिलेश यादव की रणनीति, कार्यशैली और सीटों के बंटवारे पर सवाल खड़े करते नजर आते हैं। यहाँ आँकड़ों के आँदने में कांग्रेस के इन दावों की हकीकत भी टटोलीं बेहद जरूरी हो जाती है। साल 2024 के लोकसभा चुनावों के परिणामों को अगर हम याद करें, तो जब अखिलेश यादव ने बड़े दिल का परिचय देते हुए कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में 17 सीटें दी थीं, तब कांग्रेस इनमें से सिर्फ 6 सीटों पर ही जीत का स्वाद चख पाई थी। इसके विपरीत, समाजवादी पार्टी ने अकेले अपने दम पर 37 सीटों पर शानदार परचम लहराकर राज्य की सबसे बड़ी पार्टी होने का लोहा मनवाया था। लोकसभा चुनाव के इस जमीनी और बेहद कड़वे आंकड़ों को पूरी तरह हकीकत करके यदि कोई दल विधानसभा चुनाव में डेढ़ सौ सीटों की मांग या अत्यधिक दबाव की राजनीति करे, तो इसे सियासी नासमझी कहें या कोई गहरी साजिश? दिलचस्प बात यह है कि कांग्रेस नेताओं की इस लगातार बयानबाजी और खुले हमलों पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव पूरी तरह चुपची साधे हुए हैं। वह खुद सीधे तौर पर इन बयानों पर कुछ कहने से बच रहे हैं और अपनी पार्टी के अन्य नेताओं या प्रवक्ताओं के जरिए नया-तुला पलटवार करावा रहे हैं। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि अखिलेश यादव की यह कामोशी उनकी कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक बेहद सोची-समझी और परियक् रणनीति है। वह अच्छे तरह भांप चुके हैं कि यदि उन्होंने इस वक्त कोई भी तीखा या

आक्रामक पलटवार किया, तो सारा ठीकरा विपक्षी कलह पर फूट जाएगा और बीजेपी को इसका सीधा राजनीतिक फायदा मिल जाएगा। लेकिन इसके बावजूद, सपा के अंदरखाने कार्यकर्ताओं और स्थानीय नेताओं में इस बात को लेकर जबरदस्त उबाल है कि जिस पार्टी का खुद का जनाधार यूपी में लगातार सिमट चुका है, वह इतनी बड़ी हैसियत की मांग किस बिना पर कर रही है। कांग्रेस की यह जिद और अकेले दम पर अपनी शक्तों पर राजनीति करने की आदत कोई नई नहीं है। इसके इतिहास के पन्नों को पलटें तो ऐसी कई मिसालें मिलेंगी जहाँ कांग्रेस ने अपने ही सहयोगियों की लुटिया डुबोई है और गठबंधन धर्म को तार-तार किया है। साल 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव के इतिहास को ही देख लीजिए, तब समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस को सम्मानजनक रूप से 105 सीटें दी थीं, लेकिन कांग्रेस ने जित पकड़कर 114 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए, जिसका नतीजा यह हुआ कि गठबंधन का पूरा चुनावी माहौल खराब हो गया और अंततः बीजेपी ने प्रचंड बहुमत की सरकार बना ली। यही नहीं, साल 2022 के विधानसभा चुनावों में जब प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने अपनी ताकत दिखाने के लिए सभी 403 सीटों पर अकेले लाल ठोकरी थी, तब पार्टी का ऐसा सूपड़ा साफ हुआ कि रायबरेली और अमेठी जैसी पारिवारिक बीआरपी सीटों पर भी जमानतें खतरे में पड़ गईं और कुल वोट शेयर सिमटकर महज 2.34 प्रतिशत पर आ गया। इतने बड़े धक्के के बाद भी यदि कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व क्षेत्रीय दलों के साथ टकराव का रास्ता अपनाता है, तो यह उसकी राजनीतिक अपरिपक्वता को ही उजागर करता है। कांग्रेस की इस प्रवृत्ति का असर केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि देश के दूसरे राज्यों में भी 'इंडिया' गठबंधन के भीतर इसकी कई बानगी देखने को मिल चुकी है। हाल ही में हुए बिहार विधानसभा चुनावों के दौरान भी अंतिम समय तक सीट बंटवारे को लेकर चली अंतहीन खींचतान के चलते राजद और कांग्रेस के प्रत्याशी आपस में ही 'फ्रेंडली फाइट' के नाम पर खुलकर भिड़ गए।



संजय गध्वी
अनुसूचितजनता पक्ष - 94

हिंदू धर्म में श्राद्ध पक्ष या अन्य अवसरों पर कौवे को भोजन इसलिए कराया जाता है क्योंकि उन्हें पितरों का रूप और यमराज का संदेशवाहक माना जाता है ऐसी मान्यता है कि हमारे पूर्वज कौवे का रूप धारण कर धरती पर आते हैं और परिजनों द्वारा दिया गया भोजन ग्रहण करते हैं। पितृ देवता किसी इंसान का जन्म तब करते हैं। वे सत्सत्त्वियों से निकलते हैं। इस दुनिया में जन्म का क्रम इस प्रकार है: सत्सत्त्व-पितृ देवता-देवता और इंसान। वेदों में चार वर्ण (जाति) के लोग हैं, भक्ति के आधार पर समुदाय) बताए गए हैं: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वेदों ने पितृ देवताओं की उत्पत्ति इन 4 वर्णों (समुदायों) के अंतर्गत बताई है। अथर्ववेद, 4392 मंत्र, पितृ

श्राद्ध पक्ष में कौवा को क्यों भोजन दिया जाता है...

देवताओं के रहने के बारे में बताता है। दुनिया के तीन लेवल हैं, पहला पानी वाला, दूसरा एटमिक (सूक्ष्म) लेवल; और तीसरा प्रकाशमय दुनिया (जान वाली दुनिया), जहाँ पितृ देवता रहते हैं। वेदों में उनके रहने का जिक्र आसमान और स्वर्ग के बीच में भी किया गया है। उनके रहने के स्थान को पितृलोक कहा जाता है। सत्सत्त्वियों से निकलने होने की वजह से, सात पितृ देवता हैं, जिनमें से तीन हमेशा बिना किसी रूप के हमेशा आनंद में रहते हैं। बाकी चार रूप धारण करते हैं। हमारे पूर्वज अपने सूक्ष्म शरीर के साथ अमर रहते हैं, जबकि वे पितृ लोक में रहते हैं। इसलिए वे अपने दिल की पवित्रता के आधार पर अपने करीबी रिश्तेदारों से बात करते हैं। जिन्होंने जीवन भर आधार किया है, वे शरीर छोड़ने पर तपोलोक में चले जाते हैं। जहाँ अग्नि में चढ़ना

देवताओं को चढ़ाना माना जाता है, वहीं 'श्राद्ध कर्म' करना पितृ देवताओं को चढ़ाना है। जहाँ कर्म हमारे जन्म और पुनर्जन्म तब करते हैं, वहीं पितृ देवता के नियमों को लागू करने के लिए जिम्मेदार हैं। वे कर्म की फिलॉसॉफी के अनुसार हमारे जीवन को आकार देते हैं। पावन पितृतीर्थ गया की में पिंडदानियों का आगमन आरंभ हो गया है। सभी धर्मों में हिंदू धर्म ही ऐसा धर्म है, जो पुनर्जन्म को मानता है। इसके बारे में अनेक भ्रांतियां हैं। अच्छे-अच्छे लोग आधुनिक युग में पितृलोक, पितर, श्राद्ध, पिंडदान आदि को कोपल कल्पना मानते हैं। सनातन धर्म का मूलधार वेद है प्रत्येक हिंदू को वेद में आस्था होनी चाहिए। क्या वेदों में इसकी चर्चा है? आइये, वैदिक प्रमाणों के आधार पर प्रश्नोत्तर रूप में विचार करें :- जीवनामायुः-प्रतिर त्वमन पितृणां

कविता



डॉ. सत्यवान सौरभ
(सिवानी) भिवानी,
हरियाणा

जनता के अधिकार पर, मंडराता अंधकार।
मत की चोरी रोकना, लोकतंत्र का सार।।

आरोपों के दौर में, उठते कई सवाल।
सच क्या है, यह सामने, आए अब हर हाल।।

जनता के मत पर जो, डाले अपनी घात।
लोकतंत्र की पीठ पर, करता है आघात।।

कुर्सी की खातिर यहाँ, बिकने लगे उसूल।
सत्ता मिलते ही हुए, सारे वादे धूल।।

मतदाता को भूलकर, सत्ता में मदमस्त।
जनता जागी एक दिन, सिंहासन हो ध्वस्त।।

जनता के अधिकार को, समझा जिसने माल।
वक्त पड़ेगा एक दिन, होगा उसका हाल।।

मत की चोरी हो अगर, चुप मत रहना आज।
लोकतंत्र की नींव पर, होता गहरा आघात।।

मत का सौदा जो करे, उससे पूछो बात।
जनता के अधिकार की, सौरभ ये है मात।।

चेहरे पर मुस्कान है, भीतर काला खेल।
जनता के विश्वास से, करे रोज ही खेल।।

सत्ता के गलियारों में, गुँजे झूठे बोल।
जनता के हर प्रश्न का, कौन चुकाए मोल।।

लोकतंत्र के नाम पर, होता जब व्यापार।
जनता के विश्वास पर, होता सीधा वार।।

जनादेश के नाम पर, मत करना व्यापार।
जनता के विश्वास का, रखिए सदा विचार।।

मत की ताकत कम नहीं, मत समझो कमजोर।
एक-एक मत बदलता, सत्ता का हर दौर।।

झूठे दावों से कभी, सच सके नहीं हार।
जनता जब जागे तभी, खुलता पूरा सार।।

मतपेटी की पवित्रता, रखिए सदा महान।
इसमें जनता की बसी, आशा और अरमान।।

सत्ता चाहे जो मिले, मत का रखिए मान।
जनता के अधिकार से, ऊँचा नहीं विधान।।

आरोपों का दौर है, चारों ओर सवाल।
निष्पक्ष जांच ही करे, सही खुलासा हर हाल।।

देश-विरोधी शक्तियाँ, करती अपना काम।
जनता के विश्वास को, करती है बदनाम।।

लोकतंत्र की नींव में, जनता का विश्वास।
इसको चोट लगी अगर, कैसे बचे विकास।।

जनता जागे अब यही, सौरभ समय पुकार।
मत की रक्षा से बने, लोकतंत्र दमदार।।



बंशीपुर बालक छात्रावास में कलेक्टर ने परखी व्यवस्थाएं, बच्चों से जाना पढ़ाई और सुविधाओं का हाल

अधीक्षक को साफ-सफाई,भोजन,स्वास्थ्य और सुरक्षा व्यवस्था दुरुस्त रखने का दिया निर्देश

छात्र ने पूछा... 'कलेक्टर बनने के लिए क्या करना होगा?' रोहितमा यादव ने लक्ष्य तय कर मेहनत करने का दिया मंत्र

-रवि सिंह-

कोरिया, 07 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

सोनेहत विकासखंड के दूरस्थ ग्राम बंशीपुर स्थित बालक छात्रावास में कलेक्टर रोकितमा यादव ने पहुंचकर वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया, निरीक्षण के दौरान उन्होंने छात्रावास में रह रहे बच्चों से सीधे संवाद किया और उनकी पढ़ाई-लिखाई, भोजन, स्वास्थ्य तथा रहने की सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने केवल भौतिक व्यवस्थाओं को नहीं देखा, बल्कि बच्चों से उनकी दिनचर्या, पढ़ाई और भविष्य को लेकर भी बातचीत की। जिला प्रशासन की ओर से छात्रावासों में बच्चों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने और नियमित निगरानी पर जोर दिया जा रहा है, जिला प्रशासन की वेबसाइट पर भी रोकितमा यादव को वर्तमान कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी के रूप में दर्ज किया गया है।

विस्तर से लेकर पंखे और साफ-सफाई तक की जांच-कलेक्टर ने छात्रावास के शयनकक्षों का निरीक्षण किया और बच्चों के लिए उपलब्ध बिस्तर, चादर, कंबल, पंखे तथा

बच्चों से पूछा...पढ़ाई कैसी चल रही है?

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने बच्चों से सहज माहौल में बातचीत की, उन्होंने उनसे पूछा कि पढ़ाई कैसी चल रही है, नियमित रूप से नाश्ता और भोजन मिल रहा है या नहीं तथा स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था कैसी है, कलेक्टर ने इस बात पर जोर दिया कि छात्रावास केवल बच्चों के रहने और भोजन की व्यवस्था तक सीमित नहीं होना चाहिए, यहां रहने वाले विद्यार्थियों को ऐसा वातावरण मिलना चाहिए, जहां वे पढ़ाई के साथ अपने व्यक्तित्व और आत्मविश्वास को भी विकसित कर सकें, उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता पर लगातार ध्यान दिया जाना आवश्यक है, इसके लिए पढ़ाई के साथ सामान्य ज्ञान, खेलकूद, योग और अन्य रचनात्मक गतिविधियों को भी छात्रावास की दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

हर शनिवार होगी रचनात्मक गतिविधियां

कलेक्टर ने छात्रावास में प्रत्येक शनिवार को विशेष गतिविधियां आयोजित करने के निर्देश दिए, इनमें सामान्य ज्ञान, समाचार-पत्र वाचन, खेलकूद और योगाभ्यास जैसी गतिविधियां शामिल हैं, उन्होंने बच्चों में अपनी बात रखने और सार्वजनिक रूप से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करने के लिए वाद-विवाद जैसी रचनात्मक गतिविधियां आयोजित करने पर भी जोर दिया, कलेक्टर ने कहा कि बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार किया जाना चाहिए, ताकि वे अपनी समस्याओं, सफलताओं और मन की बात को बिना झिझक सामने रख सकें, बच्चों के मन में किसी अधिकारी या शिक्षक को लेकर डर के बजाय संवाद और विश्वास का वातावरण होना जरूरी है।

साफ-सफाई की स्थिति देखी, उन्होंने अधीक्षक को निर्देशित किया कि बच्चों के उपयोग में आने वाली सभी आवश्यक सामग्री व्यवस्थित और साफ-सुथरी रखी जाए, उन्होंने कहा कि छात्रावास में रहने वाले बच्चों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए, उनके स्वास्थ्य और सुविधा को प्राथमिकता देते हुए व्यवस्थाओं की नियमित निगरानी जरूरी है, कलेक्टर ने छात्रावास की खिड़कियों में उचित जाली लगाने के निर्देश भी दिए, ताकि बच्चों को असुविधा न

हो और सुरक्षा व्यवस्था बेहतर बनी रहे, उन्होंने अधीक्षक का नियमित रात्रि प्रवास सुनिश्चित करने को कहा...साथ ही स्पष्ट किया कि छात्रावास की व्यवस्था में लापरवाही या अव्यवस्था मिलने पर जिम्मेदारी तय करते हुए कार्रवाई की जा सकती है।

जब छात्र ने पूछा... 'कलेक्टर बनने के लिए क्या करना होगा?' - निरीक्षण के दौरान एक छात्र ने कलेक्टर से ऐसा सवाल किया, जिसने पूरे संवाद को एक अलग दिशा दे दी,

छात्रावास को सिर्फ रहने की जगह नहीं, सीखने का केंद्र बनाने पर जोर

बंशीपुर छात्रावास के निरीक्षण के दौरान सामने आया सबसे महत्वपूर्ण संदेश यही रहा कि बच्चों के लिए छात्रावास की व्यवस्था केवल भोजन, बिस्तर और भवन तक सीमित नहीं होनी चाहिए। दूरस्थ क्षेत्रों से आकर छात्रावास में रहने वाले बच्चों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण, मार्गदर्शन और व्यक्तित्व विकास के अवसर भी मिलना जरूरी है, इस दृष्टि से सामान्य ज्ञान, समाचार-पत्र वाचन, खेल, योग और वाद-विवाद जैसी गतिविधियां बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने का माध्यम बन सकती हैं, वहीं कलेक्टर और बच्चों के बीच सीधे संवाद से उनकी समस्याओं और जिज्ञासाओं को समझने का अवसर भी मिलता है।

छात्र ने उत्सुकता से पूछा... 'कलेक्टर बनने के लिए क्या करना होगा?' छात्र को इस जिज्ञासा पर कलेक्टर रोकितमा यादव ने प्रसन्नता व्यक्त की और उसे विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि जीवन में किसी भी बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए सबसे पहले लक्ष्य तय करना जरूरी है, इसके बाद उस लक्ष्य के लिए नियमित मेहनत, अनुशासन और धैर्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए, उन्होंने बताया कि कलेक्टर, पुलिस अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर या वैज्ञानिक बनने के लिए विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार लक्ष्य निर्धारित कर उसी दिशा में तैयारी करनी चाहिए, 12वीं के बाद स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात यूपीएससी या पीएससी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की जा सकती है, उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करने, समाचार-पत्र पढ़ने और देश-दुनिया के सामान्य ज्ञान को मजबूत करने की

सलाह दी, कलेक्टर ने छात्र से कहा कि सफलता के लिए केवल सपना देखना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस सपने को पूरा करने के लिए लगातार मेहनत करनी पड़ती है, लक्ष्य के प्रति अनुशासन और धैर्य बनाए रखना सफलता की महत्वपूर्ण कुंजी है, छात्र की जिज्ञासा और उसके लक्ष्य को लेकर उत्सुकता की कलेक्टर ने सरहना की, उन्होंने उसे पेन भेंट किया और जीवन में खूब तरक्की करने का आशीर्वाद दिया।

सभी छात्रावासों की नियमित निगरानी के निर्देश-निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने जिला आदिम जाति विकास विभाग के सहायक आयुक्त को जिले में संचालित सभी छात्रावासों का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए, उन्होंने कहा कि प्रत्येक छात्रावास में बच्चों को आवश्यक सुविधाएं मिलें और व्यवस्थाओं की लगातार निगरानी होती रहे, उन्होंने छात्रावास अधीक्षक और शिक्षकों को यह भी समझाया कि बच्चों के साथ काम करना केवल नौकरी का

दायित्व नहीं है, सेवा का वास्तविक अर्थ बच्चों के भविष्य को संवारना, उनकी भावनाओं को समझना और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देना है, उन्होंने शासन की मंशा के अनुरूप जिम्मेदारी से कार्य करने और बच्चों की सुविधाओं एवं शिक्षा को प्राथमिकता देने की बात कही।

निरीक्षण का बड़ा संदेश

बंशीपुर जैसे दूरस्थ क्षेत्र के छात्रावास में कलेक्टर का निरीक्षण केवल व्यवस्थाओं की जांच तक सीमित नहीं रहा, एक ओर जहां उन्होंने बिस्तर, भोजन, साफ-सफाई, स्वास्थ्य और सुरक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं को परखा, वहीं दूसरी ओर बच्चों से सीधे संवाद कर उनकी पढ़ाई और भविष्य की आकांक्षाओं को जानने का प्रयास किया, खास तौर पर कलेक्टर बनने को लेकर छात्र का सवाल और उस पर मिला मार्गदर्शन इस निरीक्षण का प्रेरणादायी पहलु रहा। यह संवाद इस बात की ओर भी संकेत करता है कि दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाले बच्चों के सपने किसी बड़े शहर के बच्चों से छोटे नहीं होते-जरूरत उन्हें सही मार्गदर्शन, अवसर और प्रोत्साहन देने की है, जिला प्रशासन द्वारा छात्रावासों के नियमित निरीक्षण पर जोर दिया जा रहा है। हाल की समय-सीमा बैठक में भी कलेक्टर ने आदिम जाति विकास विभाग के अधिकारी को जिले के सभी छात्रावासों का नियमित निरीक्षण करने और विद्यार्थियों को आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे।

केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने कलेक्टोरेट परिसर में किया रुद्राक्ष पौधे का रोपण



-संवाददाता-

अम्बिकापुर, 07 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

सेवा संकल्प अभियान अंतर्गत 'सेवा मेरा योगदान' के तहत जिले के एक दिवसीय प्रवास पर पहुंचे केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू ने कलेक्टोरेट परिसर में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत रुद्राक्ष का पौधा लगाया। इस अवसर पर लुण्डा विधायक प्रबोध सिंग एवं सीतापुर विधायक रामकुमार टोपो ने भी कलेक्टोरेट परिसर में चंदन के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। पौधा रोपण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं हरित क्षेत्र के विस्तार के प्रति सहभागिता का संदेश दिया गया। इस दौरान छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के अध्यक्ष अनुराग सिंहदेव, नगर पालिक निगम अम्बिकापुर की महापौर श्रीमती मंजूषा भागत, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीरूषा सिंह, नगर पालिक निगम अम्बिकापुर के सभापति हरमिंदर सिंह टिनी, कलेक्टर अजीत वर्संत, वनमंडलाधिकारी लोकनाथ पटेल सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पर सरगुजा संभाग में आज होगी बैठक

-संवाददाता-

अम्बिकापुर, 07 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के संबंध में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों तथा विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा के लिए सरगुजा संभाग में दो दिवसीय बैठक आयोजित की जाएगी। समान नागरिक संहिता समिति के सचिव की ओर से जारी पत्र के अनुसार बैठक 8 अक्टूबर 2026 को अम्बिकापुर और 9 अक्टूबर 2026 को जशपुर में होगी। पत्र के अनुसार 8 अक्टूबर को अम्बिकापुर में शासकीय पीजी कॉलेज आडिटोरियम में दोपहर 3 बजे बैठक रखी गई है। इसमें सरगुजा, बलरामपुर-रामानुजगंज, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरपुरपुर, सूरजपुर और कोरिया जिलों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। वहीं 9 अक्टूबर को सुबह 11 बजे जशपुर में बैठक होगी, जिसमें जशपुर जिले के प्रतिनिधि शामिल होंगे। सरगुजा संभागयुक्त नरेन्द्र कुमार दुग्गा ने जिलों के राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों, धार्मिक संगठनों, शिक्षाविदों, प्रतिष्ठित नागरिकों, विशिष्ट नागरिकों, गणमान्य नागरिकों तथा निगम/मंडल/आयोग के प्रतिनिधियों को उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

झिक्की में 2.50 लाख की एमपी गोवा व्हिस्की बरामद, सुदर्शन गुप्ता गिरफ्तार लगातार कार्रवाई के बावजूद दूसरे राज्य की शराब की आमद पर बड़ा सवाल

-संवाददाता-

अम्बिकापुर, 07 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

सरगुजा संभाग में अवैध शराब और नशीले पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई के दावों के बीच जशपुर जिले के बगीचा थाना क्षेत्र के झिक्की गांव में मध्यप्रदेश की शराब की बड़ी खेप पकड़े जाने ने एक बार फिर सीमावर्ती इलाकों में अवैध शराब की सप्लाई और निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। आबकारी विभाग की संभागीय उड़नदस्ता टीम ने सुदर्शन गुप्ता के घर के पीछे बरामदे में तिरपाल से छिपाकर रखी गई 35 पेटी यानी 1,750 नग गोवा व्हिस्की बरामद की। जब्त शराब की मात्रा करीब 315 लीटर और अनुमानित कीमत 2.50 लाख रुपये बताई गई है।

जानकारी के मुताबिक 6 अक्टूबर की रात सहायक जिला आबकारी अधिकारी सुप्रसेन रंजित गुप्ता को मुखबिर से सूचना मिली थी कि झिक्की निवासी सुदर्शन गुप्ता के घर दूसरे राज्य की विदेशी शराब की बड़ी खेप रखी गई है। सूचना के आधार पर 7 अक्टूबर

की सुबह टीम ने घर पर दबिश दी। तलाशी में घर के पीछे बरामदे में तिरपाल के नीचे शराब की 35 पेटियां मिलीं। मौके पर सुदर्शन गुप्ता मौजूद था, जिसे आबकारी अधिनियम की धाराओं 34(1), 34(2), 36 और 59(क) के तहत गिरफ्तार कर जेल दाखिल की कार्रवाई की गई।

कार्रवाई बड़ी, लेकिन सवाल उससे भी बड़ा : आबकारी विभाग की टीम लगातार अवैध शराब और नशे के खिलाफ कार्रवाई का दावा कर रही है। पिछले महीनों में भी उड़नदस्ता टीम ने नशीले इंजेक्शन, कैम्लू, अवैध महुआ शराब और मिलावटी शराब से जुड़े मामलों में कार्रवाई की है। इसके बावजूद सवाल यह है कि मध्यप्रदेश से शराब की 35 पेटियां आखिर झिक्की तक कैसे पहुंचीं? यदि शराब की बिक्री या खपत के लिए लाया गया था तो इसका सप्लायर कौन है? परिवहन किस



माध्यम से हुआ? रास्ते में कितने चेकिंग प्वाइंट पर हुए? और सबसे अहम-क्या यह सिर्फ एक व्यक्ति का स्टॉक था या इसके पीछे कोई बड़ा सप्लाई नेटवर्क काम कर रहा है?

सिर्फ घर का 'स्टॉकिस्ट' या बड़े नेटवर्क की कड़ी?

35 पेटियां कोई छोटी मात्रा नहीं हैं। इतनी बड़ी खेप को घर के पीछे तिरपाल से छुकर रखना इस बात की ओर इशारा करता है कि

मामला केवल अवैध रूप से कुछ बोतलें रखने तक सीमित नहीं हो सकता। हालांकि इसका अंतिम सच जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएगा। आबकारी विभाग के लिए अब असली चुनौती आरोपी को गिरफ्तार करने से आगे बढ़कर शराब की सप्लाई चेन तक पहुंचना होगा। खास तौर पर यह पता लगाना जरूरी होगा

कि मध्यप्रदेश की यह शराब झिक्की तक किस रास्ते से पहुंची और इसे आगे किन इलाकों में खपाया जाना था। यदि जांच केवल बरामदगी और गिरफ्तारी तक सीमित रही तो असली सप्लायर और नेटवर्क पद के पीछे ही रह जाएगा।

'ओपरेशन' की सफलता का पैमाना नेटवर्क तक पहुंचना होगा

संभागीय उड़नदस्ता पहले भी बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थ और अवैध शराब पकड़ चुका है। अप्रैल में 396 नशीले इंजेक्शन तथा जुलाई में 3,528 नशीले कैम्लूज की कार्रवाई का भी विभागीय टीम ने खुलासा किया था। अगस्त में अवैध महुआ शराब की कथित मिनी फैक्ट्री पर कार्रवाई और सितंबर में मिलावटी शराब से जुड़े मामले भी सामने आए/ऐसे में झिक्की की यह कार्रवाई निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसकी असली सफलता तभी मानी जाएगी जब एमपी शराब की खेप के स्रोत, परिवहनकर्ता, सप्लायर और संभावित खरीदारों तक जांच पहुंचे। वरना हर बार एक आरोपी जेल जाएगा और कुछ समय बाद उसी रास्ते से नशे का नया माल पहुंचने का सिलसिला जारी रहेगा। फिलहाल आबकारी विभाग ने सुदर्शन गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया है। अब निगम इस बात पर है कि जांच 35 पेटियों पर खत्म होती है या इसके पीछे छिपे पूरे नेटवर्क तक पहुंचती है।

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर
जिला-सरगुजा,छओगु

रा0प्र0क्र0 /अ/-6/2025926

ईशतहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मनोष कुमार दानखडे आ. सुदर्शन दानखडे जाति जैन निवासी नमनाकला तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा छओगु के द्वारा आपन नमनाकला स्थित भूमि खसरा नंबर 322/10 रकबा 0.016 हे. एवं खसरा नंबर 322/14 रकबा 0.020 हे0 मेसे 0.002 हे0 कुल खसरा नंबर 02 कुल रकबा 0.018 हे0 भूमि के राज्य अभिलेखों में पंजीबद्ध दान पत्र एवं सुधार पत्र दिनांक 23.04.2026 के माध्यम से नामांतरण किये जाने हेतु आवेदन पेश किया गया है। उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो सुनवाई दिनांक 21.10.2026 के पूर्व स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि अथवा अभिषाक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक- 28/09/2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी।

(सील)

तहसीलदार
अम्बिकापुर,सरगुजा

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) सूरजपुर, जिला-सूरजपुर (छओगु)

रा0प्र0क्र0 202603260300044/अ/-6/अ/2025-26
ग्राम-डुमरिया, तहसील-सूरजपुर, जिला-सूरजपुर

ईशतहार

इस सार्वजनिक ईशतहार के जरिये सर्व साधारण आम जनता/संस्था/विभाग को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि आवेदिका अरिमा टोपों पुत्री तेलेश्वोर टोपों, जाति उरांव, निवासी मेनरोड, वार्ड क्रमांक-17 सूरजपुर, थाना सूरजपुर, तहसील सूरजपुर, जिला सूरजपुर, (छओगु) के द्वारा आवेदन पत्र अंतर्गत धारा 115 छग.भू-राजस्व संहिता के तहत प्रस्तुत कर लेख किया गया है कि आवेदिका के नाम ग्राम डुमरिया, प.ह.नं. 05, रा.नि.मं. बसदेई, तहसील सूरजपुर, जिला सूरजपुर (छग.) में स्थित है। जिसका खसरा नंबर 232/2, 232/3 रकबा क्रमशः 0.02, 0.04 है, भूमि है। उक्त भूमि वर्ष 2013-14 के बी-1 एवं राजस्व अभिलेखों में आवेदिका का नाम अंकित है, परंतु वर्तमान राजस्व अभिलेखों में आवेदिका के नाम के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति का नाम अंकित है। अतः उक्त भूमि के राजस्व अभिलेखों में आवेदिका का नाम अंकित किये जाने हेतु निवेदन किया गया है।

(सील)

अनुविभागीय अधिकारी (रा0)
सूरजपुर, जिला-सूरजपुर, छओगु

एसएलआरएम केंद्रों के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर स्वच्छता दीदियों को किया गया सम्मानित..

-संवाददाता-

अम्बिकापुर, 07 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)।

सेवा संकल्प अभियान के स्वच्छता ही सेवा अभियान अंतर्गत नगर पालिक निगम अम्बिकापुर द्वारा सफाई मित्र सुरक्षा सम्मान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में स्वच्छता दीदियों एवं सफाई मित्रों की स्वास्थ्य जांच कर नि:शुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। शिविर में कुल 500 स्वच्छता दीदियों एवं सफाई मित्रों की स्वास्थ्य जांच की गई। शिविर के दौरान सफाई कार्य में उपयोग किए जाने वाले माँक ड्रिल के माध्यम से सुरक्षा उपकरणों के सही उपयोग, कार्य के दौरान बर्ती जाने वाली सवधानियों एवं सुरक्षा मानकों के पालन के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। सफाई मित्रों को



कार्य के दौरान सुरक्षा उपकरणों का अनिवार्य रूप से उपयोग करने के लिए जागरूक किया गया। इस अवसर पर एसएलआरएम केंद्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्वच्छता दीदियों को सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री श्री श्रीधर साहू ने स्वच्छता दीदियों से संवाद किया। शिविर में महापौर, सभापति, एमआईसी सदस्य, पार्षदगण एवं अन्य जनप्रतिनिधि, नगर निगम आयुक्त सहित अधिकारी-कर्मचारी, स्वच्छता दीदियों एवं सफाई मित्र उपस्थित रहे।

वोट बचाओ-देश बचाओ मार्च में गरजा सूरजपुर, कांग्रेस ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त के इस्तीफे की उठाई मांग

माता कर्मा चौक से कलेक्टर कार्यालय तक निकला विरोध मार्च, एफआईआर दर्ज कर गिरफ्तारी की भी मांग...जिला कांग्रेस अध्यक्ष शशि सिंह के नेतृत्व में जुटे कार्यकर्ता



-संवाददाता-
सूरजपुर, 07 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था तथा निर्वाचन आयोग की स्वायत्तता को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी सूरजपुर ने बुधवार को 'वोट बचाओ-देश बचाओ' विरोध मार्च निकाला, जिला कांग्रेस अध्यक्ष शशि सिंह के नेतृत्व में निकले गए मार्च में कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शामिल हुए। मार्च माता कर्मा चौक से शुरू होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचा। कांग्रेस की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, प्रदर्शन के दौरान मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे, उनके विरुद्ध एफआईआर दर्ज करने और गिरफ्तारी की मांग उठाई गई, कार्यकर्ताओं ने निर्वाचन प्रक्रिया की निष्पक्षता और संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता को लेकर गंभीरता से जताया।

निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली पर कांग्रेस ने उठाए सवाल

प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया तथा संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता आवश्यक है, कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि चुनाव प्रणाली में निष्पक्षता और पारदर्शिता को लेकर उठ रहे सवालों का समाधान किया जाना चाहिए, जिला कांग्रेस की ओर से कहा गया कि मतदाता का वोट लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है और मताधिकार की सुरक्षा को लेकर कांग्रेस अपना आंदोलन जारी रखेगी, कांग्रेस नेताओं ने यह भी कहा कि 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान के माध्यम से मतदाताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने तथा निर्वाचन प्रक्रिया से जुड़े सवालों को जनता के बीच उठाने का प्रयास किया जा रहा है।

माता कर्मा चौक से कलेक्टर कार्यालय तक मार्च-बुधवार दोपहर माता कर्मा चौक पर जिला कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का जमावड़ा हुआ, यहां से कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने 'वोट बचाओ-देश बचाओ' के नारों के साथ विरोध मार्च शुरू किया। मार्च शहर के प्रमुख

मार्ग एनएच-43 से होते हुए जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचा, प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कलेक्टर कार्यालय पहुंचने के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला भी फूँका और अपनी मांगों को लेकर विरोध दर्ज कराया। 'सड़क से संसद तक लड़ाई' का



कांग्रेस की तीन प्रमुख मांगें...

पहली मांग- इस्तीफा: निर्वाचन आयोग की स्वायत्तता को समझौता करने के आरोपों को लेकर मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार से तत्काल इस्तीफा देने की मांग की गई।

दूसरी मांग-कानूनी कार्रवाई: कांग्रेस ने निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने और लोकतांत्रिक मूल्यों को नुकसान पहुंचाने के आरोपों की जांच कर एफआईआर दर्ज करने तथा गिरफ्तारी की मांग रखी।

तीसरी मांग-निर्वाचन आयोग की स्वतंत्रता: कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग को राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त रखने और उसकी संस्थागत साख को बनाए रखने की मांग की।

दावा-जिला कांग्रेस अध्यक्ष शशि सिंह सहित कांग्रेस नेताओं ने कहा कि लोकतंत्र की नींव निष्पक्ष मतदान प्रक्रिया और स्वतंत्र संवैधानिक संस्थाओं पर टिकी है, कांग्रेस ने आरोप लगाया कि निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं, नेताओं ने कहा कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन मताधिकार तथा संवैधानिक व्यवस्था से जुड़े मुद्दों को लेकर अपनी आवाज उठाते रहेंगे, उनके अनुसार, यह लड़ाई केवल एक जिले या राज्य तक सीमित

महामंत्री संजय दोषी, सुनील अग्रवाल, नरेंद्र जैन, इस्माइल खान, विद्यासागर सिंह, कुसुमलता राजवाड़े, प्रदीप साहू, सुनील सारथी, इमियाज जफर, संतोष पावले, जगत आर्याम, नवीन जायसवाल, संजोव श्रीवास्तव, अंशुल गोयल, आशु इराकी, वेद प्रकाश मिश्रा, महेंद्र साहू, मनोज डालमिया, जफर हैदर, कवल बिहारी टेकम, प्रदीप राजवाड़े, अरविंद यादव, लवकेश गुर्जर, जितेंद्र दुबे, प्रवेश गोयल, रामकुमार बंजौर, समीर सिंह, अविनाश साहू, परमेश्वर राजवाड़े, असकरण गुप्ता, रोहित कन्नौज, लिवनेश सिंह, रोहन राजवाड़े, आनंद चौधरी, हेमंत साहू, सुरेश सिंह आर्याम, बबिता गुप्ता, जरीना सुल्ताना, अंचल रुचि टण्डो, राजू राजवाड़े, मोल सिंह, हेरा सिंह, रामलखन सिंह, रामचंद्र सिंह, देवती राजवाड़े, अजय कुमार यादव और आशीष सिंह सहित विभिन्न मोर्चों, प्रकोटों एवं विभागों के पदाधिकारी, ब्लॉक अध्यक्ष, निकाय प्रतिनिधि और कार्यकर्ता शामिल रहे।

पत्नी की हत्या के आरोप में पति गिरफ्तार, चौकी चेन्ना पुलिस की कार्रवाई

बकरी की खाल को लेकर विवाद के बाद मारपीट का आरोप, पुलिस ने आरोपी के कब्जे से वारदात में प्रयुक्त डंडा किया जब्त

-संवाददाता-

सूरजपुर, 07 अक्टूबर 2026 (घटती-घटना)। चौकी चेन्ना क्षेत्र के ग्राम पलमा में महिला की हत्या के मामले में पुलिस ने उसके पति को गिरफ्तार किया है, पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक जांच में बकरी की खाल को लेकर पति-पत्नी के बीच विवाद के बाद मारपीट की घटना सामने आई, जिसमें महिला की मौत हो गई। मामले में पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त डंडा भी जब्त किया है। पुलिस के अनुसार, ग्राम पलमा निवासी रजनी पैकरा ने 6 अक्टूबर 2026 को चौकी चेन्ना में रिपोर्ट दर्ज कराई। रिपोर्ट में बताया गया कि घटना वाले दिन सुबह वह घर पर थी, उसका भतीजा रिकू पैकरा उर्फ बड्ढा घर की बाड़ी में मटन बिक्री करने के बाद अपनी पत्नी रामकुमारी के साथ बस्ती की ओर गया था। दोपहर में दोनों वापस घर लौटे।

बकरी की खाल को लेकर हुआ विवाद- रिपोर्ट के अनुसार, घर लौटने के बाद रिकू अपनी पत्नी से बकरी की खाल के संबंध में पूछताछ करने लगा, खाल के बारे में जानकारी नहीं मिलने पर उसने कथित रूप से मारपीट करने के लिए डंडा उठा लिया। इस दौरान रजनी पैकरा ने उससे डंडा छीन लिया और खेत की ओर चली गई, राम को वापस लौटने पर घर के आसपास कई लोग मौजूद थे, रजनी के अनुसार, जब वह घर के अंदर गई तो रामकुमारी मृत अवस्था में पड़ी थी और उसके शरीर पर चोट के निशान दिखाई दे रहे थे, इसके बाद रजनी ने रिकू पैकरा पर मारपीट कर पत्नी की हत्या करने का आरोप लगाते हुए पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई।

बीएनएस की धारा 103(1) के तहत मामला दर्ज- पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर अपराध क्रमांक 219/26 दर्ज करते हुए भारतीय न्याय संहिता की धारा 103(1) के तहत हत्या का मामला पंजीबद्ध किया और जांच शुरू की, मामले की सूचना मिलने पर पुलिस



अधीक्षक सूरजपुर योगेश कुमार पटेल (भापुसे) ने आरोपी को जल्द गिरफ्तार करने तथा मामले में वैज्ञानिक साक्ष्यों का सूक्ष्मता से संकलन करने के निर्देश दिए, निर्देश के बाद चौकी चेन्ना पुलिस ने मामले की विवेचना आगे बढ़ाते हुए आरोपी की तलाश में दबिश दी और रिकू पैकरा उर्फ बड्ढा, पिता स्व. संतलाल पैकरा, उम्र 32 वर्ष, निवासी ग्राम पलमा, चौकी चेन्ना को पकड़ लिया।

पूछताछ के बाद डंडा जब्त- पुलिस के अनुसार, पूछताछ के दौरान आरोपी ने हत्या की वारदात को अंजाम देना स्वीकार किया। उसकी निशानदेही पर पुलिस ने घटना में प्रयुक्त डंडा जब्त किया और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया, मामले की आगे की विवेचना पुलिस द्वारा की जा रही है। घटना के कारणों और परिस्थितियों को लेकर पुलिस उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर जांच आगे बढ़ा रही है।

इन पुलिसकर्मियों की रही भूमिका-यह कार्रवाई अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेश देवांगन एवं एसडीओपी ओडुंगी राजेन्द्र मण्डवी के मार्गदर्शन में चौकी प्रभारी चेन्ना के.रमण राम मरावी, प्रधान आरक्षक लालमन राजवाड़े, शत्रुघ्न पोतें, राजकुमार, आरक्षक जगत पैकरा, कमलेश्वर सिंह, दीपक खलखो, गिरजा शंकर, घनश्याम सिंह एवं शैलेश राजवाड़े की सक्रिय भूमिका से की गई।

गणित शिक्षक को जन शिक्षक बनाए जाने पर अभिभावकों में नाराजगी

करंजी हायर सेकेंडरी स्कूल में गणित की पढ़ाई प्रभावित होने का दावा, पिछले परीक्षा परिणाम को लेकर भी उठे सवाल...

-संवाददाता-

सूरजपुर, 07 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय करंजी में पदस्थ गणित विषय के शिक्षक महेंद्र राजवाड़े को जन शिक्षक के कार्य में लगाए जाने को लेकर अभिभावकों में नाराजगी सामने आ रही है, अभिभावकों का कहना है कि विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या बेहतर होने के बावजूद गणित जैसे महत्वपूर्ण विषय के शिक्षक को नियमित शिक्षकीय कार्य से अलग कर जन शिक्षक की जिम्मेदारी दिए जाने से विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। अभिभावकों के अनुसार, गणित ऐसा विषय है जिसमें विद्यार्थियों को नियमित अध्यापन, अभ्यास और विषय शिक्षक के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, खासकर बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए गणित की तैयारी परीक्षा परिणाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे में विद्यालय के गणित शिक्षक को अन्य दायित्व में लगाए जाने को लेकर अभिभावक सवाल उठा रहे हैं।

नियमित गणित की पढ़ाई प्रभावित होने का दावा- बताया गया है कि महेंद्र राजवाड़े को जन शिक्षक की जिम्मेदारी दिए जाने के बाद विद्यालय में गणित विषय की नियमित पढ़ाई प्रभावित होने की बात अभिभावकों द्वारा कही जा रही है। उनका कहना है कि विद्यालय में यदि विषय शिक्षक उपलब्ध है तो उसका प्राथमिक दायित्व



पिछले परीक्षा परिणाम को लेकर भी चिंता

अभिभावकों ने विद्यालय के पिछले परीक्षा परिणाम को लेकर भी सवाल उठाए हैं, उनके अनुसार, पिछले वर्ष कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम करीब 17 प्रतिशत रहा था, ऐसे में विद्यालय में उपलब्ध विषय शिक्षकों का नियमित अध्यापन में उपयोग और विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति में सुधार पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, अभिभावकों का कहना है कि कमजोर परीक्षा परिणाम के बाद विद्यालय में विषयवार शिक्षकों की उपलब्धता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों की शैक्षणिक कमियों को दूर किया जा सके और आगामी बोर्ड परीक्षा में परिणाम बेहतर हो।

विद्यार्थियों को नियमित रूप से अध्यापन कराना होना चाहिए, अभिभावकों की चिंता इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि आगामी परीक्षाओं को देखते हुए विद्यार्थियों को अभी से विषयवार तैयारी की जरूरत है। उनका कहना है कि गणित में नियमित अभ्यास और शिक्षक की निगरानी नहीं होने से विद्यार्थियों

की तैयारी पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है।
जन शिक्षक की जिम्मेदारी पर भी जांच की मांग- अभिभावकों का कहना है कि शासन स्तर पर व्याख्याता एवं विषय शिक्षकों को जन शिक्षकीय कार्य में लगाए जाने को लेकर निर्देश जारी किए गए हैं, यदि संबंधित निर्देशों में विषय शिक्षकों को ऐसे

कार्यों से अलग रखने अथवा विद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था को प्राथमिकता देने का प्रावधान है, तो करंजी हायर सेकेंडरी स्कूल में गणित शिक्षक को जन शिक्षक बनाए जाने की प्रक्रिया की जांच की जानी चाहिए, हालांकि, इस संबंध में संबंधित आदेश अथवा विभागीय निर्देश की प्रति सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आई है, इसलिए इस बिंदु पर अंतिम स्थिति संबंधित शिक्षा विभाग के आदेश और अपीलें की जांच के बाद ही स्पष्ट होगी।

अभिभावकों ने शिक्षा विभाग से हस्तक्षेप की मांग की- अभिभावकों ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों से पूरे मामले की जांच कराने तथा विद्यालय में गणित विषय की नियमित पढ़ाई सुनिश्चित कराने की मांग की है, उनका कहना है कि विद्यार्थियों के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने हुए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे विषय शिक्षकों की कमी अथवा अन्य प्रशासनिक दायित्वों के कारण नियमित अध्यापन प्रभावित न हो, अभिभावकों का कहना है कि शिक्षक केवल कक्षा में पाठ पढ़ाने तक सीमित नहीं होते, बल्कि विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी, विषय संबंधी कठिनाइयों को दूर करने और कमजोर विद्यार्थियों पर अतिरिक्त ध्यान देने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए विषय शिक्षक की उपलब्धता को लेकर किसी भी प्रशासनिक निर्णय का असर सीधे विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पड़ सकता है।

साइबर अपराध से बचाव और किशोर न्याय की समझ बढ़ाने पैरालीगल वॉलेंटियर्स को मिला विशेष प्रशिक्षण डिजिटल अरेस्ट, ऑनलाइन ठगी और साइबर सुरक्षा के उपायों की दी जानकारी, बच्चों के अधिकार एवं विधिक संरक्षण पर भी हुई चर्चा

-संवाददाता-
सूरजपुर, 07 अक्टूबर 2026
(घटती-घटना)।

जिला न्यायालय सूरजपुर के सभागार में 6 अक्टूबर 2026 को साइबर क्राइम, डिजिटल अरेस्ट, साइबर सुरक्षा एवं किशोर न्याय अधिनियम जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पैरालीगल वॉलेंटियर्स के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई, कार्यशाला का उद्देश्य पैरालीगल वॉलेंटियर्स को बदलते साइबर अपराधों, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव तथा बच्चों से जुड़े विधिक प्रावधानों की जानकारी देकर उन्हें आमजन तक जागरूकता पहुंचाने के लिए सक्षम बनाना रहा।

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के निर्देशन में आयोजित कार्यशाला प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सूरजपुर थॉमस एक्का

के मार्गदर्शन तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव पायल टोपनो की देखरेख में आयोजित हुई।

डिजिटल अरेस्ट और ऑनलाइन ठगी से बचाव की जानकारी- प्रशिक्षण के दौरान साइबर सेल प्रभारी अधिकारी जावेद मियादद, साइबर विशेषज्ञ विनोद सारथी एवं सहकार्य सिंह ने पैरालीगल वॉलेंटियर्स को साइबर अपराध के बदलते स्वरूप से अवगत कराया, डिजिटल अरेस्ट के नाम पर की जाने वाली धोखाधड़ी, ऑनलाइन ठगी तथा साइबर सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी गई, विशेष प्रशिक्षण में साइबर अपराध से बचाव के व्यावहारिक उपायों पर भी चर्चा की गई। साथ ही इस बात पर जोर दिया गया कि पैरालीगल वॉलेंटियर्स अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर लोगों को साइबर अपराधों के नए तरीकों के प्रति सतर्क करें, ताकि जागरूकता के माध्यम से साइबर ठगी के मामलों को रोकने में मदद मिल सके।



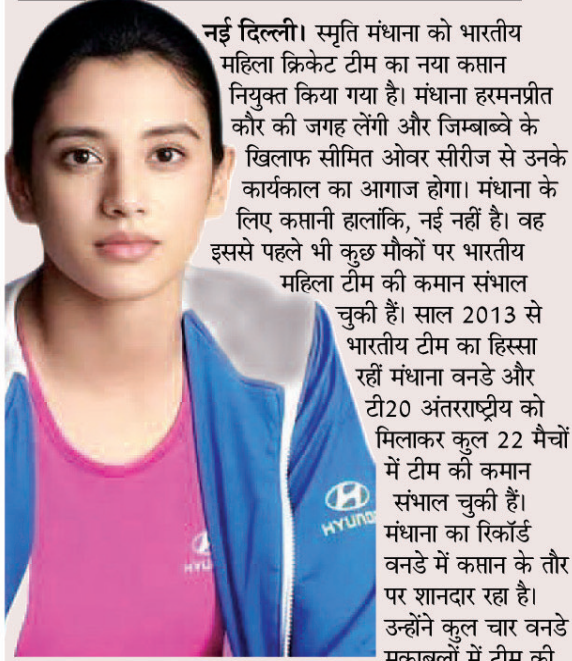
किशोर न्याय अधिनियम पर विशेष सत्र- कार्यशाला का एक महत्वपूर्ण सत्र किशोर न्याय अधिनियम पर केंद्रित रहा, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव पायल टोपनो, जो पूर्व

में किशोर न्याय बोर्ड सूरजपुर की पीठासीन अधिकारी भी रह चुकी हैं, ने बच्चों से संबंधित विधिक प्रावधानों, उनके अधिकारों और संरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी, उन्होंने

बच्चों से जुड़े मामलों में संवेदनशीलता के साथ कार्य करने, उन्हें उपलब्ध विधिक संरक्षण की जानकारी रखने तथा बढ़ते अपराधों की रोकथाम के लिए जागरूकता को आवश्यक बताया।

गांव और बस्तियों तक पहुंचेगी विधिक जागरूकता-कार्यशाला में यह संदेश भी दिया गया कि पैरालीगल वॉलेंटियर्स न्याय व्यवस्था और समाज के अंतिम व्यक्ति के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। प्रशिक्षण के माध्यम से मिली जानकारी को गांवों, बस्तियों और आम नागरिकों तक पहुंचाकर साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ ही बच्चों के अधिकारों और किशोर न्याय संबंधी कानूनों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी, इस पहल का उद्देश्य केवल प्रशिक्षण तक सीमित न रहकर प्राप्त जानकारी को समाज के उस वर्ग तक पहुंचाना है, जहां साइबर अपराध, ऑनलाइन ठगी अथवा बच्चों से जुड़े कानूनी अधिकारों की जानकारी सीमित हो सकती है, पैरालीगल वॉलेंटियर्स के माध्यम से न्याय और विधिक जागरूकता को जमीनी स्तर तक पहुंचाने की दिशा में यह प्रशिक्षण महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

मंधाना के लिए नई नहीं है कप्तानी: पहले भी संभाली है महिला टीम की कमान



नई दिल्ली। स्मृति मंधाना को भारतीय महिला क्रिकेट टीम का नया कप्तान नियुक्त किया गया है। मंधाना हरमनप्रीत कौर की जगह लेंगी और जिम्बाब्वे के खिलाफ सीमित ओवर सीरीज से उनके कार्यकाल का आगाज होगा। मंधाना के लिए कप्तानी हालांकि, नई नहीं है। वह इससे पहले भी कुछ मौकों पर भारतीय महिला टीम की कमान संभाल चुकी हैं। साल 2013 से भारतीय टीम का हिस्सा रही मंधाना वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय को मिलाकर कुल 22 मैचों में टीम की कमान संभाल चुकी हैं। मंधाना का रिकॉर्ड वनडे में कप्तान के तौर पर शानदार रहा है। उन्होंने कुल चार वनडे मुकाबलों में टीम की कप्तानी की है और सभी में जीत दिलाई है। वहीं, टी20 में भी मंधाना का रिकॉर्ड दमदार रहा है। उन्होंने कुल 18 मैचों में टीम की अगुआई की है, जिसमें से 11 मुकाबलों में टीम को जीत मिली है, जबकि सिर्फ छह मैचों में हार का सामना करना पड़ा है।

डब्ल्यूपीएल में दो बार जीत चुकी हैं खिलात

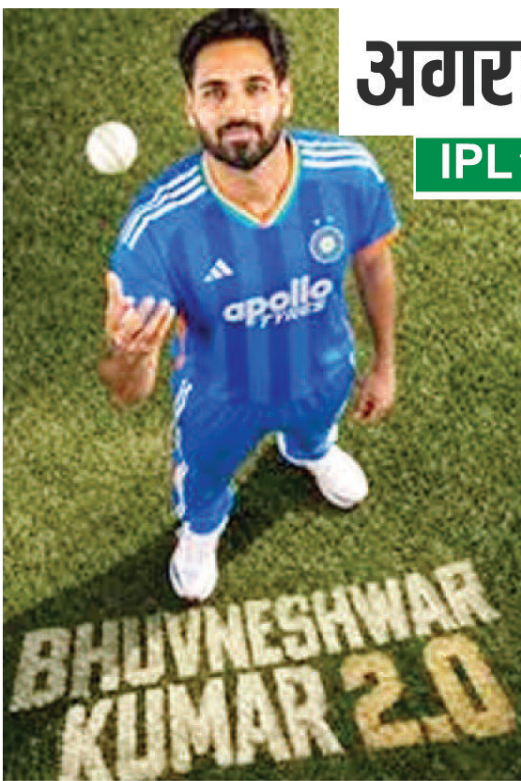
महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में भी स्मृति मंधाना रॉयल चैलेंजर्स बंगलुरु (आरसीबी) को दो बार अपनी कप्तानी में चैंपियन बना चुकी हैं। उन्होंने 35 मैचों में आरसीबी की कमान संभाली है, जिसमें से टीम को 18 में जीत नसीब हुई है, तो 17 मुकाबलों में टीम को हार का सामना करना पड़ा है। यानी मंधाना के पास कप्तानी का अच्छा खास अनुभव मौजूद है। खास बात यह है कि स्मृति लंबे समय से हरमनप्रीत कौर के कप्तान रहने पर उपकप्तान की जिम्मेदारी को संभाल रही थीं।

जिम्बाब्वे सीरीज से शुरू होगा कार्यकाल

स्मृति मंधाना बतौर कप्तान अपने कार्यकाल का आगाज जिम्बाब्वे के खिलाफ टी20 और वनडे सीरीज से करेंगी। इस सीरीज के लिए चुनी गई टीम में हरमनप्रीत कौर को भी जगह दी गई है। बतौर कप्तान हरमनप्रीत का अनुभव भी मंधाना के काम आएगा। हरमनप्रीत की उम्र 37 साल हो चुकी है और यही वजह है कि चयनकर्ता उनके रिटायरमेंट लेने से पहले मंधाना को कप्तान के तौर पर पूरी तरह से तैयार करना चाहते हैं।

सीनियर चयन समिति की बैठक में शामिल रहेंगे लक्ष्मण

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव देवजीत सैकिया ने मंगलवार को कहा कि सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण भविष्य में सीनियर चयन समिति की सभी बैठकों में शामिल होंगे। वह गुवाहाटी में टी20 अंतरराष्ट्रीय और भारत ए टीम के चयन के लिए हुई बैठक में भी मौजूद थे। लक्ष्मण और अब पूर्व मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर के बीच संवाद की स्पष्ट कमी रही थी। माना जाता है कि चोटिल खिलाड़ियों के बारे में सीओई की ओर से समयसीमा की जानकारी नहीं मिलने के कारण कई बार अप्रिय स्थिति पैदा हुई।



अर्जेंटीना की जर्सी में आखिरी बार मैदान पर उतरे मेसी, फैंस को दिया धन्यवाद, बोले- काश... मैं पूरी जिंदगी अर्जेंटीना के लिए खेल पाता

मेसी ने प्रशंसकों को कहा शुक्रिया

मेसी ने इसके बाद अर्जेंटीना के प्रशंसकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने अपने पूरे करियर में जहां भी कदम रखा, स्टेडियम हमेशा खराब धरे मिले। उन्होंने कहा, 'मैं इन सभी पलों के लिए आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। मैं जहां भी गया, स्टेडियम भरा हुआ था। विश्व कप हो या कोपा अमेरिका, आप हर जगह मौजूद थे। हम जहां भी गए, ऐसा लगा जैसे अपने घर में खेल रहे हों।' मेसी ने कहा कि यहां खेलना उनके जीवन के सबसे खुशहाल पलों में से एक रहा और विश्व कप जीतने के बाद पहली बार खेलने की रात को वह कभी नहीं भूलेंगे।

पेनल्टी पर खुद दागा। विदाई समारोह में लियोनल मेसी ने हथ में माइक थामा तो पूरा स्टेडियम उनकी बात सुनने के लिए शांत हो गया। मेसी ने अर्जेंटीना की जर्सी में बिताए अपने सफर के मुश्किल दौर से लेकर जीती गई ट्रॉफियां तक को याद किया। मेसी ने कहा, 'काश, मैं पूरी जिंदगी अर्जेंटीना के लिए खेल पाता।' यह सुनते ही पूरा स्टेडियम तालियों और नारों से गुंज उठा। इसके बाद मेसी ने अपने साथियों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा इस जर्सी के लिए अपना सब कुछ दिया। मेसी ने कहा कि उनके साथियों ने उनका सपना पूरा करने में मदद की और विश्व कप, कोपा अमेरिका समेत कई बड़ी ट्रॉफियां जिताने में उनका साथ दिया। उन्होंने कहा, 'हमने गर्व के साथ खेला और हर टीम के खिलाफ मुकाबला किया। मुझे पता था कि मैं दिग्गजों से घिरा हुआ हूँ।'

अर्जेंटीना की जर्सी में बिताए अपने सफर के मुश्किल दौर से लेकर जीती गई ट्रॉफियां तक को याद किया। मेसी ने कहा, 'काश, मैं पूरी जिंदगी अर्जेंटीना के लिए खेल पाता।' यह सुनते ही पूरा स्टेडियम तालियों और नारों से गुंज उठा। इसके बाद मेसी ने अपने साथियों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा इस जर्सी के लिए अपना सब कुछ दिया। मेसी ने कहा कि उनके साथियों ने उनका सपना पूरा करने में मदद की और विश्व कप, कोपा अमेरिका समेत कई बड़ी ट्रॉफियां जिताने में उनका साथ दिया। उन्होंने कहा, 'हमने गर्व के साथ खेला और हर टीम के खिलाफ मुकाबला किया। मुझे पता था कि मैं दिग्गजों से घिरा हुआ हूँ।'

अगरकर की विदाई बनी भुवी की वापसी का कारण

IPL में प्रदर्शन और चयन समीकरण की कहानी, शमी के लिए भी खुले दरवाजे!

मुंबई। भारतीय क्रिकेट में एक बार फिर भुवनेश्वर कुमार के नाम की चर्चा है। करीब चार साल तक राष्ट्रीय टीम से बाहर रहने के बाद 36 वर्षीय अनुभवी तेज गेंदबाज की भारतीय टी20 टीम में वापसी हो गई है। उन्हें न्यूजीलैंड के खिलाफ इस महीने होने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए टीम में शामिल किया गया है। भुवनेश्वर की वापसी ऐसे समय हुई है, जब अजीत अगरकर चयन समिति के अध्यक्ष पद से हट चुके हैं और प्रज्ञान ओझा अंतरिम अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। माना जा रहा है कि अगरकर की मौजूदगी में भविष्य की ओर देखने की रणनीति के कारण भुवनेश्वर के लिए वापसी का रास्ता आसान नहीं था।

भुवनेश्वर ने 2025 और 2026 के आईपीएल सत्र में रॉयल चैलेंजर्स बंगलुरु के लिए शानदार प्रदर्शन किया। इन दो सत्रों में उन्होंने कुल 45 विकेट लिए और टीम की लगातार दो आईपीएल खिताबी जीत में

अहम भूमिका निभाई। 2025 में उन्होंने 17 विकेट हासिल किए, जबकि 2026 के सत्र में उनके खाते में 28 विकेट रहे। नई गेंद से स्विंग और सीम करने की उनकी क्षमता ने एक बार फिर उन्हें चर्चा में ला दिया। पावरप्ले में उनकी गेंदबाजी ने कई शीर्ष बल्लेबाजों को परेशान किया। भुवनेश्वर को 2022 में भारतीय टीम से बाहर किए जाने के पीछे उनकी गति में कमी और गेंद को स्विंग कराने की क्षमता का कम होना बड़ी वजह माना गया था। उस दौर में टी20 क्रिकेट में युवा और तेज गेंदबाजों का दबदबा बढ़ रहा था। लेकिन भुवनेश्वर ने हार नहीं मानी। उन्होंने बिना किसी सार्वजनिक बयान या विवाद के अपनी गेंदबाजी पर काम जारी रखा। उत्तर प्रदेश के लिए सफेद गेंद के क्रिकेट में खेलते रहे और युवा गेंदबाजों के लिए भी मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। इसके बाद आईपीएल में उनके प्रदर्शन ने साबित किया कि उनकी सबसे बड़ी ताकत आज भी गेंद को हवा में स्विंग कराने और सीम मूवमेंट हासिल करने की कला है।

इतिहास आपको याद रखेगा

अजीत अगरकर का सीनियर पुरुष चयन समिति के प्रमुख के तौर पर कार्यकाल समाप्त हो गया है। अगरकर अब आगे इस पद पर नहीं रहेंगे। अगरकर का कार्यकाल यादगार रहने के साथ ही विदाई में भी गिर रहा। अब भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने अगरकर को सराहा है। गंभीर का कहना है कि इतिहास अगरकर के प्रति ज्यादा उदार रहेगा। अजीत अगरकर का मुख्य चयनकर्ता के रूप में कार्यकाल चार अक्टूबर को खत्म हो गया। इसके बाद गुवाहाटी में हुई टीम चयन बैठक में अगरकर मौजूद नहीं थे। रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने फिलहाल चयन समिति के सदस्य और पूर्व भारतीय स्पिनर प्रज्ञान ओझा को कार्यवाही की जिम्मेदारी संभालने को कहा है। ओझा अब अंतरिम चीफ सेलेक्टर के तौर पर काम कर रहे हैं।

पूर्व भारतीय कप्तान बोले- संजू सैमसन और भी ज्यादा मौके मिलने के हकदार

खिलाड़ियों में असुरक्षा पैदा हो रही: गावस्कर

नई दिल्ली, एजेसी। भारतीय टी20 टीम के कप्तान श्रेयस अय्यर ने मंगलवार को लखनऊ के इकाना स्टेडियम में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले गए पहले मुकाबले में अपने अंतरराष्ट्रीय टी20 करियर का पहला शतक लगाया। अय्यर ने मात्र 42 गेंदों पर शतक लगाया। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने श्रेयस अय्यर की जमकर तारीफ की है। गावस्कर ने जियोस्टार पर कहा, 'श्रेयस अय्यर की यह शानदार पारी थी। वह अजेय लग रहे थे, और वेस्टइंडीज के गेंदबाज चाहें किसी भी लाइन और लेथ पर गेंद फेंकें, अय्यर के पास हर चीज का जवाब था। उन्होंने जो शॉट खेलें, वे देखने लायक थे, खासकर रोमरियो शेफर्ड की गेंद पर अपर-कट, जिससे पता चला कि वह गंभीर थे। इस भारतीय टी20 टीम के कप्तान बनने के बाद से श्रेयस अय्यर का बल्ले से प्रदर्शन थोड़ा खराब रहा है। हाल के दिनों में, जीत मिली है, लेकिन बल्ले से उनका अपना फॉर्म पिता का विषय था।'

उन्होंने कहा, 'उनके लिए एक बड़ी पारी खेलना जरूरी था, और उन्होंने पहले टी20 में अच्छा किया। अय्यर ने रन चेज पर पूरा नियंत्रण रखा और बीच के ओवरों में तेजी से रन बनाते रहे। उन्होंने सिर्फ 28 गेंदों में अपने पचास रन पूरे किए और फिर पूरी तरह से गियर बदल दिया, सिर्फ 15 गेंदों के अंदर अगले 50 रन बनाकर 102 तक पहुंच गए। सोशल मीडिया पर श्रेयस की बैटिंग फॉर्म को लेकर सवाल उठ रहे थे। इस शतक ने उन सभी को चुप करा दिया है। यह पारी इस बात का पक्का संकेत है कि श्रेयस अय्यर अपने बेस्ट फॉर्म में वापस आ गए हैं।'

एक असफलता संजू के पुराने रिकॉर्ड से बड़ी नहीं होनी चाहिए

हाल ही में अफगानिस्तान के खिलाफ लगाए थे दो अर्धशतक

पूर्व भारतीय कप्तान ने विकेटकीपर और सलामी बल्लेबाज संजू सैमसन पर भी अपनी राय रखते हुए कहा, 'एक असफलता संजू के पुराने रिकॉर्ड से बड़ी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने हाल ही में इसी रोल में

अफगानिस्तान के खिलाफ दो अर्धशतक लगाए थे। फिर एशियन गेम्स में उनका बुरा प्रदर्शन रहा, लेकिन वह वहां तीसरे नंबर पर बैटिंग कर रहे थे, इसलिए मैं सच में उन्हें दोष नहीं दूंगा। अब, वह वापस ओपनिंग करने आए हैं, और पहले टी20 में 11 रन बनाकर आउट हो गए। यह काफी नहीं है कि मैं संजू की जगह वैभव सूर्यवंशी को टीम में शामिल करूँ। गावस्कर ने कहा, 'आपको एक खिलाड़ी को पूरा मौका देना चाहिए, खासकर उसे जो अभी-अभी उस रोल में वापस आया हो जिसमें वह सहज हो। एक कम स्कोर से कुछ नहीं बदलता। संजू ने दिखाया है कि वह टॉप ऑर्डर में बया कर सकते हैं और वह लंबे समय तक खेलने के हकदार हैं। वैभव एक स्पेशल टैलेंट हैं, और उनका समय आया, लेकिन अभी के लिए, संजू वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज में ओपनिंग करने के लिए सही आदमी हैं। आप हर गेम के बाद लगातार बदलाव नहीं कर सकते। इससे ड्रेसिंग रूम में असुरक्षा पैदा होती है।'



श्रेयस अय्यर ने तोड़ा विराट कोहली का रिकॉर्ड

लखनऊ। भारतीय कप्तान श्रेयस अय्यर ने वेस्टइंडीज के खिलाफ मंगलवार को भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी इकाना क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मैच में 102 रन की नाबाद पारी खेली। 43 गेंदों में अय्यर ने छह छक्कों और 10 चौके लगाए। इस पारी के साथ ही अय्यर ने रिकॉर्ड्स की झड़ो लगा दी है। श्रेयस की इस दमदार पारी की मदद से भारत ने वेस्टइंडीज को आठ विकेट से हराया और सीरीज में 1-0 की बढ़त ले ली।

सर्वाच्च रन बनाने वाले चौथे भारतीय

श्रेयस अय्यर बतौर कप्तान टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाले भारतीयों की सूची में चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। शीर्ष तीनों पारियां रोहित शर्मा के नाम हैं, जिन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ नाबाद 121 रन, श्रीलंका के विरुद्ध 118 रन और वेस्टइंडीज के खिलाफ नाबाद 111 रन की पारियां खेली हैं। श्रेयस अकेले ऐसे भारतीय कप्तान हैं, जिन्होंने रन चेज करते हुए शतक लगाया।

ईशान के साथ रिकॉर्ड साझेदारी

टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में दूसरी पारी में बल्लेबाजी करते हुए किसी भारतीय कप्तान का पिछला सबसे बड़ा स्कोर 94* रन था, जो विराट कोहली ने 2019 में हैदराबाद में वेस्टइंडीज के खिलाफ बनाया था। अय्यर वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 क्रिकेट में शतक लगाने वाले तीसरे भारतीय बन गए हैं। उनसे पहले रोहित शर्मा (111*) और केएल राहुल (110*) यह कारनामा कर चुके थे। इस पारी के दौरान अय्यर ने ईशान किशन के साथ 137 रन की अटूट साझेदारी की, जो टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में रन चेज के दौरान भारत के लिए तीसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। इस मामले में यशवी जायसवाल-शुभमन गिल की जोड़ी शीर्ष पर है, जिसने वेस्टइंडीज के विरुद्ध साल 2023 में 165 रन जुटाए थे। वहीं, जायसवाल ने शुभमन गिल के साथ साल 2024 में जिम्बाब्वे के विरुद्ध 156* रन जोड़े थे। 137* रन की साझेदारी टी20 अंतरराष्ट्रीय में भारत के लिए तीसरी विकेट की संयुक्त रूप से सबसे बड़ी साझेदारी है। इतने रन की साझेदारी ईशान किशन और सूर्यकुमार यादव ने 2026 में न्यूजीलैंड के खिलाफ की थी।



गिल शीर्ष पर बरकरार श्रेयस सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग पर

दुबई। भारत के टी20 कप्तान श्रेयस अय्यर बुधवार को खेल के सबसे छोटे प्रारूप की ताजा आईसीसी रैंकिंग में करियर के सर्वश्रेष्ठ सातवें स्थान पर पहुंच गए, जबकि वनडे कप्तान शुभमन गिल ने 50 ओवर की बल्लेबाजी सूची में शीर्ष स्थान बरकरार रखा। अय्यर की 43 गेंदों पर 10 चौकों और छह छक्कों से सजी नाबाद 102 रन की पारी ने टी20 विश्व चैंपियन को मंगलवार को लखनऊ में वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज के पहले मैच में आठ विकेट की शानदार जीत दिलाई।

श्रेयस को 18 पायदान का फायदा

इस विस्फोटक पारी से अय्यर को 18 पायदान का फायदा हुआ जिससे वह इस प्रारूप में भारत के तीसरे सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग बल्लेबाज बन गए हैं। आईसीसी के अनुसार ईशान किशन और अभिषेक शर्मा शीर्ष दो स्थानों पर बने हुए हैं, जबकि तिलक वर्मा 10वें स्थान पर हैं जिससे भारत के चार बल्लेबाज शीर्ष 10 में शामिल हो गए हैं। 15 वर्षीय बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी आठ स्थान के फायदे से 46वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

कोहली तीसरे स्थान पर खिसके

वेस्टइंडीज के बल्लेबाज शेरफान रदरफोर्ड की तेजतर्रार 56 रन की पारी ने उन्हें 10 पायदान के फायदे से 37वें स्थान पर पहुंचा दिया, जबकि पाकिस्तान के हसन नवाज (62 पायदान के फायदे से 48वें स्थान पर) एशियाई खेलों के बाद सूची में ऊपर बढ़े हैं। एशियाई खेलों के सेमीफाइनल और फाइनल में अबरार अहमद (29 रन देकर कोई विकेट नहीं और 29 रन देकर एक विकेट) के आंकड़े उन्हें गेंदबाजों में शीर्ष स्थान बरकरार रखने के लिए काफी नहीं थे। पूर्व कप्तान विराट कोहली दूसरे से तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे वनडे में शानदार शतक के बाद केएल राहुल को सात पायदान का फायदा हुआ जिससे वह 10वें स्थान से शीर्ष 10 में वापस आ गए हैं।

राशिद की शीर्ष स्थान पर वापसी

लेग स्पिनर राशिद खान आठवीं बार शीर्ष पर लौटे हैं। भारत के बाएं हाथ के स्पिनर अक्षर पटेल 16 पायदान ऊपर चढ़कर सातवें स्थान पर पहुंच गए। वहीं, गिल ने गुवाहाटी में वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे मैच में नाबाद 223 रन बनाने के बाद वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर अपनी स्थिति मजबूत कर ली। यह वनडे प्रारूप में उनका दूसरा दोहरा शतक था जिसने उन्हें 25 रेटिंग अंक दिलाए और इस प्रदर्शन से उन्होंने अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ 841 रेटिंग अंकों की बराबरी की।

